Simardeep Singh and Dr S.N. Singh (April 2022). Sikh Dharam: From Spirituality to State Establishment
International Journal of Economic Perspectives,*16*(4),39-49
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

सिक्ख धर्म : अध्यात्म से राज्य स्थापना की ओर

Simardeep Singh, Research Scholar,
Department of History,
Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu, Rajasthan.

Dr S.N. Singh, Research Supervisor
Department of History,
Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu, Rajasthan.

सारांश

सिक्ख धर्म दुनिया का सबसे छोटा और लोकप्रिय धर्म है। सिक्ख धर्म मध्यकाल में उस समय अस्तित्व में आया जब उत्तर भारत में मुस्लिम शासन स्थापित था; तथा कट्टरवादी मुस्लिम शासकों द्वारा समाज में रह रहे लोगों को इस्लाम अपनाने के लिए विवश किया जाता था व उन पर अनेक अत्याचार किए जाते थे। तत्कालीन समय में प्रचलित धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियां मानव अधिकारों पर आघात कर रही थी। असमानता, घृणा, बेईमानी, धोखा शोषण जैसे अवगुणों के कारण समाज का आधार खोखला होता जा रहा था। गुरू नानक देव ज पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने मानवाधिकारों के सरंक्षण के लिए आवाज उठाई। और लोगों को राजनितिक, आर्थिक, सामाजिक अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया और उन्हें इस कार्य के लिए आध्यात्मिक मार्ग का सहारा लेने की प्रेरणा दी। गुरू नानक के पख्यात अन्य नौ सिक्ख गुरू हुए जिन्होंने उनकी इस आध्यात्मिक परंपरा का विकास करने का किया और सिक्ख आध्यात्मिकता से सिक्ख राज्य स्थापित करने में सफल हुए।

Keywords :- (खोज शब्द): आध्यात्मिकता, सिक्ख गुरू, राज्य, भौतिकवाद सामाजिक-व्यवस्था, मानवाधिकार, पुर्नजागरण

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Simardeep Singh**

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

मध्यकालीन भारत में तुर्की शासन स्थापित होने के कारण इस्लाम का प्रचार-प्रसार भी अपने चरम पर था। जिसमें अनेक सुफी सन्तों ने अलग-अलग सुफी सम्प्रदायों के माध्यम से महत्वपूर्ण भुमिका निभाई। 15वीं शताब्दी के अंत तक उत्तर भारत में सुफी मत के एक दर्जन से भी अधिक सम्प्रदाय स्थापित हो चुके थे। धीरे-धीरे इस्लाम का प्रचार इतना अधिक बढ़ने लगा कि बड़ी संख्या में हिंदू धर्म के लोगों ने इस्लाम अपनाना प्रारंभ कर दिया। जिनमें अल्प संख्या में ही ऐसे लोग थे जिन्होंने अपनी इच्छानुसार इस्लाम स्वीकार किया। क्योंकि तत्कालीन मुस्लिम शासकों ने राज्य में रह रही जनता को जबरदस्ती भी इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए विवश किया। उन पर अनेक अत्याचार किए जाते थे। हिंदू व्यापारियों पर अवैध कर लगाए जाते थे; उनका गंभीर उत्पीड़न किया जाता था। उनके पूजा स्थलों को नष्ट कर दिया जाता था। इस प्रकार राजनीतिक उथल-पुथल ने जनता की धार्मिक भावनाओं को अत्यधिक प्रभावित किया। जिस समय समाज में यह धार्मिक राजनीतिक उथल-पुथल चल रही थी उसी समय 1469 में गुरू नानक देव जी का जन्म लाहौर से लगभग चालीस मील दूर, तलवंडी राय भोए, जिसे अब ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है, में मेहता कालियान दास बेदी के घर पर हुआ। गुरू नानक देव जी ही सिक्ख धर्म के प्रवर्तक व दस सिक्ख गुरूओं में सबसे पहले गुरू थे।

गुरू नानक देव जी के समकालीन समाज में भारत में लोधी वंश का शासन था तथा लोधी वंश भ्रष्ट होने के कारण पूरी तरह से नष्ट हो गया और उसके बाद बाबर ने मुगल सत्ता स्थापित की। समाज में पूरी तरह से उथल-पुथल थी लोगों को स्वतंत्र रूप से जीवन निर्वाह करने से वंचित किया जा रहा था। बड़े-बड़े मोलवी व पंडितों ने धर्म को अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया था। तथा वे लोगों को अनेक धार्मिक कर्मकांड और पाखंडों के माध्यम से धर्म की परिभाषा समझाने का प्रयास कर रहे थे। गुरू नानक देव जी ने लोगों को पाखंडों, अंधविश्वासों और कर्मकांडो से बचाया।

गुरू नानक देव जी ने वर्गो, जातियों और समुदायों में लोगों के विभाजन को नकार दिया। उनके लिए सभी व्यक्ति समान रूप से सम्मान के पात्र थे। गुरू नानक ने व्यक्ति की आंतरिक विशिष्टता को महत्त्व दिया और वे चाहते थे कि वह आत्म

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

अनुशासन की प्रक्रिया के माध्यम से प्रगति करे। इस अनुशासन की प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए उन्होंने तीन गुण बताए जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है– 1. शारीरिक अनुशासन 2. नैतिक अनुशासन 3. आध्यात्मिक अनुशासन।

1. **शारीरिक अनुशासन :**– शारीरिक अनुशासन में गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए सेवा और दान कार्य शामिल हैं।
2. **नैतिक अनुशाासन :**– नैतिक अनुशासन में धर्मी जीवन और स्वार्थी इच्छाओं से ऊपर उठना शामिल है।
3. **अध्यात्मिक अनुशासन :**– अध्यात्मिक अनुशासन में अंधविश्वासों, पाखंडों, कर्मकांडो आदि को नकार कर एक सर्वोच्च सर्वशक्तिमान परमपिता परमेश्वर में विश्वास रखना शामिल है।

सिक्ख धर्म एकेश्वरवादी आस्था में विश्वास रखता है। यह ईश्वर को एकमात्र एक के रूप में पहचानता है। वह जो समय या स्थान के अधीन नहीं है। वह जो ब्रह्मांड का निर्माता, पालनकर्ता और संहारक है। इसके अतिरिक्त सिक्ख धर्म में नैतिकता और धर्म एक साथ चलते है। नैतिक गुणों का समावेश दैनिक जीवन में सद्गुणों को अभ्यास आध्यात्मिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। गुरू नानक देव जी ने इस आध्यात्मिक मार्ग को अपनाकर जीवन निर्वाह करने का संदेश दिया।

जिस समय गुरू नानक देव जी लोगों को अध्यात्मिक और नैतिक जीवन जीने का संदेश दे रहे थे उस समय समाज की पूरी व्यवस्था उथल–पुथल हो चुकी थी मानवधिकारों का पूरी तरह से हनन हो रहा था।

समाज में अन्याय, असमानता, धार्मिक दमन, महिलाओं के शोषण और मानवीय मुल्यों का पूरी तरह ह्रास हो रहा था। गुरू नानक देव जी ने लोगों को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया और उन्हें अध्यात्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने समाज को वास्तविक और निष्पक्ष तरीके से सुरक्षित जीवन जीने के लिए प्रेरित दिया। उन्होंने अपने अनुयायियों को अपने और दुसरों के अधिकारों के लिए उठ खड़े होने का आग्रह किया उन्होंने उत्साहपूर्वक तर्क दिए कि उनके अधिकारों की रक्षा के लिए मानक, निर्धारित किए

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

जाने चाहिए। चाहे कुछ भी हो, किसी भी कीमत पर अंत समय तक शोषण के विरूद्ध आवाज उठानी चाहिए। वह लोकतांत्रिक शासन के पक्ष में थे, जहां जनता को अपना नेता स्वयं चुनने का अधिकार प्राप्त हो और अपने जीवन को अपने अनुसार निर्वाह करने का पूर्ण अधिकार हो। उन्होंने यहाँ तक कहा कि शासकों को शालीनता, समानता और सहानुभूति के साथ शासन करना चाहिए।

गुरू नानक देव जी ने अपना पूरा जीवन समाज को मानवता और आध्यात्मिकता का संदेश देने व गुरू नानक देव जी के पश्चात सिक्ख अध्यात्म की परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य गुरू अंगद देव जी ने किया। जिन्हें दुसरे सिक्ख गुरू के रूप में जाना जाता है। उन्होंने गुरूमुखी लिपी का विकास किया जिससे पंजाबी भाषा के विकास को बल मिला तथा सिक्ख धर्म की शिक्षाओं और मान्यताओं का पंजाबी भाषा के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया।

1552 में गुरू अंगद देव जी के निधन के पश्चात गुरू अमरदास जी ने सिक्ख धर्म के तीसरे गुरू के रूप में इस कार्य को आगे बढ़ाया तथा गुरू नानक देव जी व गुरू अंगद देव जी की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए सिक्ख परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य किया। गुरू अमरदास जी ने यह कार्य भार 1574 तक निभाया। उनके पश्चात उनके दामाद गुरू रामदास जी ने चौथे गुरू के रूप में सिक्ख धर्म की बागडौर संभाली। गुरू रामदास जी ने 1577 ई. में 'अमृत सरोवर' नामक एक नगर की स्थापना की जिसे आज 'अमृतसर' के नाम से जाना जाता है।

मुगल सम्राट अकबर, गुरू रामदास जी का बहुत सम्मान करते थे। गुरू जी के कहने पर अकबर ने पंजाब का एक साल का लगान माफ कर दिया था।

गुरू रामदास जी के पश्चात गुरू अर्जुन देव जी सिक्खों के पांचवे गुरू के रूप में गुरू गद्दी पर विराजमान हुए। वह गुरू रामदास जी के सबसे छोटे पुत्र थे। गुरू अर्जुन देव जी ने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर का निर्माण करवाया तथा सिक्ख धर्म के माध्यम से समानता का प्रचार करने के लिए मियां मीर नामक मुस्लिम संत से स्वर्ण मंदिर की नींव रखवाई। मंदिर में सभी समुदायों तक पहुंच का प्रतिनिधित्व करने के लिए चार प्रवेश द्वार थे। गुरू अर्जुन देव जी ने उस समय तक के सभी सिक्ख गुरूओं द्वारा दी गई शिक्षाओं व लेखनी को एकत्रित कर सिक्ख ग्रंथ आदि ग्रन्थ की

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

रचना की। सिक्ख दर्शन में समानता के एक ओर संकेत के रूप में गुरू जी ने अनेक महान हिंदु व मुस्लिम संतो के लेखन को भी आदि ग्रंथ में शामिल किया। जिनके विचार सिक्ख मान्यताओं के अनुरूप थे। सिक्ख धर्म के प्रचार की बढ़ रही लहर ने अनेक हिंदु व मुस्लमानों को सिक्ख धर्म ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। बहुत से मुस्लिम लोगों ने सिक्ख धर्म अपनाया तो इसका परिणाम यह हुआ कि तत्कालिन मुस्लिम मौलानाओं को यह बात सहन नहीं हुई। शेख अहमद सरहिन्दी और शेख फरीद बुखारी जैसे मुस्लिम मौलानाओं ने अकबर की मृत्यु के पश्चात जहांगीर का साथ देकर उसे राजगद्दी पर बिठाया और सिख धर्म की बढ़ती लहर को समाप्त करने के लिए प्रेरित किया।

उसी समय जहांगीर के पुत्र खुसरों ने उसके विरूद्ध बगावत की हुई थी। जहांगीर ने गुरू अर्जुन देव पर झूठा आरोप लगाया कि उन्होंने उसके विरूद्ध खुसरों की सहायता की है। तथा उन्हें बंदी बनाकर मुगल दरबार में पेश किया गया और मुस्लिम धर्म स्वीकार करने के लिए विवश किया गया। लेकिन गुरू अर्जुन देव जी ने मुस्लिम धर्म अपनाने से इन्कार कर दिया।

बन्दी बनाए जाने से पहले गुरू अर्जुन देव जी ने सभी मुखिया सिक्खों को बुलाकर गुरू गद्दी का उत्तरदायित्व 25 मई 1606 को अपने पुत्र गुरू हरगोबिंद जी को सौंप दिया और उन्हें आज्ञा देते हुए कहा–

भयंकर समय आ रहा है बुरी शक्तियाँ मुंह खोलकर मानव के मौलिक अधिकारों को छीनने की ताक में है। गुरू नानक का घर सत्य, प्रेम स्वाभिमान और स्वतन्त्रता का रक्षक रहा है। लोगों को बन्धनों से मुक्त करवाने का कार्य हमने पूर्ण शान्तिमय ढंग से मुक्त करवाने का कार्य हमने पूर्ण शान्तिमय ढंग से किया है। परन्तु अब समय बदल गया है। मुगलों की आत्मा अपना मानवीय स्वरूप और स्वभाव त्याग चुकी है। हो सकता है कि इसको जगाया जा सके और इसके निरंतर समाप्त हो रहे मानव स्वभाव को पुनः कायम किया जा सके। मुगलों की आत्मा पशुओं की भांति हो गई है। शायद अभी भी इन्सानी रूप में आ सके। मैं जाता हूं और जाकर जहाँगीर को बताता हूं कि एक ओर उसके आदेश से क्या–क्या अत्याचार हो सकता है और दूसरी और ईश्वर और ईश्वर के मनुष्यों के प्रेम की खातिर क्या–क्या कष्ट

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

सहे जा सकते है। शायद कुकर्मों का दृश्य देखकर मुगलों की आत्मा जागृत हो जाए। परन्तु यदि शान्तिमय रहकर शारीरिक दुःख सहने का ढंग सफल न हुआ तो समझ लेना कि मुगलों की आत्मा पूर्णतः मानवीय स्वभाव त्याग चुकी है और पशुवृति की ओर चल पड़ी है। फिर इनकी आत्मा को मानवीय स्वभाव में परिवर्तित करने की खातिर दुख झेलना उतना ही व्यर्थ होगा। जितना की सींगो वाले जंगली जानवर के आगे लेटकर उसका पशु स्वभाव बदलने का प्रयत्न व्यर्थ होता है। समझ आ रहा है कि अच्छाई और बुराई की शक्ति में संघर्ष होगा। इसलिए कमर कस लो। आप शस्त्र पहनो और अन्य को भी इसके लिए प्रेरित करो। अत्याचारियों का डटकर मुकाबला करो और तब तक डटे रहो जब तक की उनको मानवता का पाठ न पढ़ा दो।

गुरू अर्जुन देव जी को 26 मई 1606 ई. को मुरतजा खाँ ने गिरफ्तार किया। उन्होंने मुस्लिम धर्म स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। फलस्वरूप उनको अनेक यातनाएं दी गई। गुरू साहिब को उबलते पानी में बिठाया गया। उनके शरीर पर गर्म रेत डाली गई उन्हें गर्म लोहे पर बिठाया गया। गुरू जी का सारा शरीर छलनी-छलनी हो गया परन्तु वे अकाल-पुरख के भाणे में अडोल चित रहे। अन्ततः 30 मई 1606 को मानवता की रक्षा करते हुए शहीद हो गए। गुरू अर्जुन देव जी की शहादत समाज के लिए एक उत्साह और प्रेरणा बनी। जिसके पश्चात सिक्ख धर्म मुगलों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों का विरोध करने के लिए सशस्त्र विद्रोह की ओर अग्रसर हुए।

अपने पिता गुरू अर्जुन देव जी के पदचिन्हों पर चलते हुए गुरू हरगोबिंद सिंह जी ने छठे सिक्ख गुरू के रूप में उत्तरदायित्व सम्भाला। तथा तत्कालीन समाज पर हो रहे मुगलों के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए एक की बजाय दो तलवारों को पहना, एक अपने दाएं ओर व दुसरी बाएं ओर। उन्होंने एक का नाम 'मिरी' रखा व दुसरी का 'पिरी' रखा। 'मिरी' लौकिक शक्ति और भौतिक शक्ति का प्रतीक है। मिरी की अवधारणा सांसारिक भौतिकवादी और राजनितिक शक्ति का प्रतीक है।

यह अवधारणा राजाओं और शासकों द्वारा प्राप्त पारंपरिक शक्ति से जुड़ी हुई है, जहाँ सैन्य शक्ति का परिणाम लोगों का शासन करने या प्रभावित करने की

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

शक्ति और क्षमता में होता है।

'पिरी' का अर्थ है संत, पवित्र व्यक्ति, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और आध्यात्मिक अधिकारों का रक्षक। 'पिरी' की अवधारणा आध्यात्मिक शक्ति से जुड़ी हुई है।

इस प्रकार सिख परंपरा में 'मिरी, पिरी' शब्द मानव अस्तित्त्व की भौतिकवादी अवधारणा और मानव आत्मा के आध्यात्मिक पहलू को इंगित करते हैं। गुरू हरगोबिंद सिंह जी ने 'मिरी, पिरी' की दो तलवारें पहनकर सिक्खों को जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलुओं के महत्त्व से अवगत कराया। यह शब्द सिक्खों के लिए एक बुनियादी सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने उनकी वैचारिक प्रक्रिया को प्रभावित किया और उनकी सामाजिक सरंचना, राजनीतिक व्यवहार, सांप्रदायिक संगठन, नेतृत्व और राजनीति को नियंत्रित किया है। गुरू हरगोबिंद साहिब जी ने सिक्खों को समुदाय के लोगों की भौतिक जरूरतों और लोगों की आध्यात्मिक अवधारणा व अधिकारों से अवगत कराया। तथा उन्हें उसके प्रति हमेशा सतर्क रहना चाहिए। मानव प्रयास के इन दो महत्त्वपूर्ण पहलुओं का प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान रखना चाहिए। चाहे वह सिक्ख है या गैर-सिक्ख। इस प्रकार छठे गुरू श्री हरगोबिंद साहिब जी के समय में सिक्ख धर्म आध्यात्मिकता के प्रचार प्रसार के साथ-साथ तत्कालिन शासक वर्ग द्वारा हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध सशस्त्र शक्ति के रूप में भी एकजुट हुए। तथा एक सिक्ख सैन्य व्यवस्था को जन्म दिया। जिस कारण सिक्ख धर्म धीरे-धीरे राज्य स्थापना की ओर भी अग्रसर हुआ।

1701 ई. में गुरू हरगोबिंद सिंह जी ने अपने अनुयायियों को बुलाया और अपने पोते श्री हर राय जी को गुरूत्व प्रदान किया तथा उसी शाम को उनका निधन हो गया। गुरू हर राय जी (31 जनवरी 1630 – 20 अक्तूबर 1661) सिख धर्म के दस गुरूओं में से सातवें गुरू थे जिन्होंने 19 मार्च 1644 को अपने दादा गुरू हरगोबिंद जी के नक्शेकदम पर चलते हुए गुरू पद संभाला। सिक्ख धर्म की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए गुरू हर राय जी ने अनेक कार्य किए। उन्होंने अपने दादा श्री गुरू हरगोबिंद द्वारा प्रारंभ की गई सैन्य परंपरा को व्यवस्थित किया। उनके समय में सेना में घुडसवारों की संख्या 2200 थी। सिक्ख धर्म के प्रचार और सिक्ख धर्म को संगठित करने के लिए उन्होंने पंजाब के मालवा और दोआब क्षेत्रों के कई दौरे किए।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

उन्होंने लाहौर, सियालकोट, पठानकोट, सांबा, रामगढ़ और जम्मू–कश्मीर के कई स्थानों का भी दौरा किया। उन्होंने 360 सिक्ख मिशनरीयों की स्थापना की। जिससे सिक्ख कोम को ओर अधिक मजबूती व बल मिला। गुरू हर राय ने कीरतपुर में एक आयुर्वेदिक अस्पताल और एक शोध केन्द्र स्थापित किया। सिक्ख परंपरा को जारी रखने के लिए गुरू हर राय ने अनेक कार्य किए तथा अनेक कठिनाइयों का सामना किया और 1661 तक गुरू गद्दी का कार्यभार संभाला 1661 में उन्होंने अपने पुत्र गुरू हरकिशन जी को गुरू गद्दी पर विराजमान किया जो 10 सिक्ख गुरूओं में 8वें गुरू थे।

गुरू हरकृष्ण जी दस सिक्ख गुरूओं में से आठवें थे। वह सातवें गुरू श्री गुरू हर राय सहिब जी और माता कृष्ण कौर जी के दूसरे पुत्र थे। 1661 में अपने निधन से पहले गुरू हर राय जी ने घोषणा की थी कि उनके छोटे बेटे हर कृष्ण अगले सिक्ख गुरू होंगे। इस प्रकार हर कृष्ण साहिब पांच साल की आयू में 20 अक्तूबर 1661 को गुरू गद्दी पर विराजमान हुए।

मानव इतिहास में भगवान के बहुत कम भक्त है जिन्होंने इतनी कम उम्र में आध्यात्मिकता का सर्वोच्च स्तर हासिल किया जैसे कि गुरू हर कृष्ण साहिब जी ने किया था। उन्होंने लोगों को केवल एक ईश्वर को संजोने का संदेश दिया था। उन्होंने जूनून को त्यागने और धैर्य दान और प्रेम के गुणों को सीखने की प्रेरणा दी। वर्ष 1663 के दौरान जब गुरू हर कृष्ण जी दिल्ली में थे उस समय हैजा व चेचक की महामारी फैली हुई थी। सात वर्ष की आयु में गुरू साहिब ने पीड़ित लोगों की देखभाल और सेवा की। रोगग्रस्तों की सेवा करने की प्रक्रिया में गुरू जी स्वयं चेचक से पीड़ित हो गए। अंततः 30 मार्च 1664 को केवल आठ वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

गुरू हर कृष्ण जी के पश्चात गुरू तेग बहादुर जी ने 9वें गुरू के रूप में गुरूगद्दी संभाली और गुरू नानक देव जी द्वारा स्थापित समतावादी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए गुरू गद्दी के दायित्व को निभाया। उन्होंने अपना पूरा जीवन सिक्ख धर्म को समर्पित कर दिया। 1675 ई. में मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा उनका सिर कलम कर दिया गया। क्योंकि उन्होंने इस्लाम अपनाने से इनकार कर दिया और

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

कश्मीर में हिंदुओं के जबरन धर्मांतरण का विरोध किया था।

गुरू तेग बहादुर जी के शहीद होने के पश्चात 1675 ई. में गुरू गोबिंद राय, जो बाद में गुरू गोबिंद सिंह बने, सिक्खों के दसवें गुरू के रूप में गुरू गद्दी पर विराजमान हुए। गुरू तेग बहादुर जी की कैद यातना व मृत्यु के समय गुरू गोबिंद सिंह जी केवल 9 वर्ष के थे। उन्होंने उन परिस्थितियों को बड़ी गहराई के साथ अनुभव किया, जिस कारण आने वाले वर्षों में सिक्खों को औरंगजेब की सेना से लड़ने और लोगों को धार्मिक कट्टरता और उत्पीड़न से बचाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। तथा इसके लिए उन्होंने खालसा पंथ स्थापित किया। खालसा का अर्थ है– पुरूषों और महिलाओं का एक समूह जो समानता और शांति में रहने के लिए समर्पित है, लेकिन खुद को और दुसरों को अन्याय और अत्याचार से बचाने के लिए तैयार है।

इसके पश्चात ही गुरू गोबिंद सिंह जी के जीवन में संघर्ष का दौर प्रारंभ हो गया। तथा यह संघर्ष उनके जीवन के अन्तिम समय तक चलता रहा। सबसे पहला जो संघर्ष हुआ वह पहाड़ी राजाओं के साथ हुआ जो भांगानी नामक स्थान पर सन् 1689 में राजा भीम चंद कलूरिया के साथ हुआ उस समय गुरू साहिब की आयु केवल 20 वर्ष थी। इस युद्ध में गुरू साहिब समस्त सिक्ख सेना सहित विजयी हुए तथा राजा भीम चन्द यह बात बर्दाशत नहीं कर पाया जिस कारण वह मुगल शासक औरंगजेब के पास सहायता मांगने गया तथा भीम चंद की सेना व मुगल सेना ने संयुक्त रूप से गुरू जी पर 1690 में आक्रमण किया। यह युद्ध नादोन में हुआ जिसमें सिक्ख सेना विजयी हुई। गुरू गोबिंद सिंह की बढ़ती लोकप्रियता को न तो मुगल ही सहन कर पा रहे थे और न ही पहाड़ी राजा। वे लगातार सिक्ख सेना पर आक्रमण कर रहे थे। 1700 ई. में संयुक्त रूप से पहाड़ी राजाओं एवं मुगल सेना ने आनंदपुर साहिब में सिक्ख सेना पर आक्रमण किया। 1700 ई. में संयुक्त रूप से पहाड़ी राजाओं एवं मुगल सेना ने आनंदपुर साहिब में सिक्ख सेना पर आक्रमण किया। इसके पश्चात 1703 में चमकौर नामक स्थान पर एक सुद्ध लड़ा गया जिसमें गुरू गोबिंद सिंह जी के दो बड़े पुत्र शहीद हो गए तथा दो छोटे पुत्र मुगल सेना द्वारा बंदी बनाकर दीवार में चिनवा दिए गए। इसके पश्चात गुरू गोबिंद सिंह जी

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

मुगल बादशाह औरंगजेब को एक पत्र लिखते है। जिसे 'जफ़रनामा' कहा जाता है। जिसमें उन्होंने राजा का ध्यान देश के लोगों की ओर आकर्षित किया।

इसके पश्चात गुरू गोबिंद सिंह जी की मुलाकात सितंबर के आखिरी सप्ताह में बैरागी माधो दास के साथ हुई। जो अपने मंत्रो के साथ आने वाले संतो और महमानों को अपने वश में करने के प्रयत्न करता रहता था। माधो दास ने उस समय के दादू-पंथ के महंत जैत राम के साथ भी बुरा व्यवहार किया। इसलिए महंत जैत राम ने गुरू गोबिंद सिंह जी से नांदेड आने के लिए विनती की। गुरू साहिब नांदेड पहुंचे लेकिन माधो दास के शिविर में नहीं गए। अगली सुबह जिस समय माधवदास अपने मठ में नहीं था तो गुरू जी मठ में गए और माधव दास के बिस्तर पर बैठ गए। जब माधव दास को यह पता चला तो वह बहुत क्रोधित हो गया। और उसने अपने योग बल से बिस्तर को उल्टा करने का प्रयास किया लेकिन वह विफल हो गया। माधो दास और अधिक क्रोधित होकर अपने मठ में आया लेकिन गुरू जी के मस्तक पर तेज़ देखकर वह सारा क्रोध भूल गया और विनम्रतापूर्वक अपना सर झुकाया और पूछा कि वह कौन हैं। इसके पश्चात् माधोदास पूर्ण रूप से गुरू को समर्पित हो गए अर्थात 'गुरू का बंदा' बन गए जो बंदा सिंह बदादुर के नाम से विख्यात हुए। तथा सिख सेना का नेतृत्व किया।

1708 ई. में बंदा सिंह बहादुर ने पंजाब की ओर कूच किया तथा पंजाब के शासकों की क्रूरता को समाप्त करने के लिए सिक्ख सेना को पुनः संगठित किया। नांदेड में गुरु की शिक्षाओं का बंदा सिंह पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने निश्चय किया कि वह तब तक आराम नहीं करेगा, जब तक अत्याचारियों को समाप्त न कर दे। बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के पश्चात बंदा सिंह 1709 में पंजाब के विभिन्न शहर जो वर्तमान हरियाणा का भाग है जैसे समाना, सोनीपत, कैथल, घुरहम थस्का, शाहबाद, कपूरी, सढौरा इत्यादि पर विजय प्राप्त करते हुए सरहिंद पहुँचता है उस समय सरहिंद का नवाब वजीर खान था। दोनों के बीच में मई 1710 में सरहिंद से 15 मील दूर छप्पर चिरी के मैदान में युद्ध हुआ। जिसमें नवाब वजीर खान मारा गया। मुगल सेना युद्ध के मैदान से भाग गई और सरहिंद पर सिक्ख सेना ने अधिकार कर लिया। इस प्रकार मई 1710 में खालसा पंथ के साथ-साथ खालसा राज

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022

भी स्थापित कर दिया गया।

उपर्युक्त विवरण के अध्ययन के बाद हमें पता चलता है कि सिक्ख धर्म के पहले गुरू श्री गुरू नानक देव जी ने तत्कालीन समय में समाज पर हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए एक मानवतावादी पंथ स्थापित किया था। जिससे अध्यात्म के मार्ग पर चलकर अत्याचार करने वालों का मन परिवर्तन करने का प्रयास प्रारंभ हुआ था लेकिन धीरे-धीरे समाज पर ये अत्याचार और अधिक बढ़ते चले गए। गुरू नानक देव जी के पश्चात अन्य नौ सिक्ख गुरूओं ने भी अपना पूरा जीवन इसी कार्य में न्यौछावर कर दिया। गुरू नानक देव जी ने जो आध्यात्मिक मार्ग प्रारंभ किया आगे चलकर वह गुरू हरगोबिंद सिंह जी द्वारा एक सेना के रूप में स्थापित किया गया और दसवें गुरू श्री गुरू गोबिंद सिंह जी द्वारा उसी सिक्ख सेना के नेतृत्व में मुगल बादशाह औरंगजेब के अत्याचारों से रक्षा के लिए आजीवन युद्ध लड़े गए। तथा उसके पश्चात बंदा सिंह बहादुर ने बलिदान किया। तथा सिक्ख धर्म जो आध्यात्मिकता से प्रारंभ हुआ था मई 1710 में वह एक राज्य स्थापित करने में कामयाब हुआ।

संदर्भ

1. A History of Sikhs (1469-1839) Vol-I, Khuswant Singh, Published in India by Oxoford University Press.
2. श्री गुरू अर्जुन देव जी दी शहीदी, एस. महिन्द्र सिंह, सिक्ख मिशनरी कालेज (लुधियाना)
3. गुरू अर्जुन देव शहीदी अते रचना, डॉ. जोध सिंह, पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला।
4. The book of the Ten Masters, Puran Singh, P. Singh Brothers, Amritsar.
5. गुरू गोबिंद सिंह जीवन ते रचना, डॉ. सुरिंदर सिंह कोहली, पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला।
6. बन्दा सिंह बहादुर, गंडा सिंह, सिक्ख इतिहास रिर्सच बोर्ड (श्रोमणी गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी श्री अमृतसर)
7. LOHGARH The world's largest fort (The capital of the Sikh Kingdom), Harjinder Singh dilgeer, Gagandeep Singh, Gurvinder Singh, Published by Haryana Academy of History and Culture, Kurukshetra.

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Simardeep Singh**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: April 2022